यूको काशी अमृत

वाराणसी अंचल - छमाही पत्रिका

वर्ष - 6 * अंक - 15 * अक्तूबर, 2020 - मार्च, 2021

तमसो मा ज्योतिर्गमय

यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

यूको राजभाषा प्रतिज्ञा

"हम, यूको बैंक के स्टाफ-सदस्य, सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करते हैं कि
हम भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु निरंतर कार्य करेंगे।
हम अपने बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन में गति लाने एवं
उसकी स्थिति को उन्नत करने के प्रति सदैव सजग रहेंगे।
हम अपने सामूहिक प्रयास से राजभाषा के क्षेत्र में अपने बैंक को गौरवशाली बनाएंगे।
हम स्वयं राजभाषा में दृढ़तापूर्वक कार्य करेंगे एवं दूसरों को भी प्रेरित करेंगे।

हम यह प्रतिज्ञा भी करते हैं कि हम राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम के उपबंधों
एवं वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करके
राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी
यूको बैंक को सर्वोत्कृष्ट श्रेणी का बैंक बनाएंगे।"

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust

दिनांक 03.12.2020 को आयोजित नराकास (बैंक) वाराणसी की 18वीं ऑनलाइन छमाही बैठक में राजभाषा का कार्यांवयन सुनिश्चित कराने हेतु प्रशासनिक कार्यालय संवर्ग में यूको बैंक, अंचल कार्यालय, वाराणसी को प्रथम पुरस्कार तथा वाराणसी अंचल की छमाही पत्रिका “यूको काशी अमृत” को पत्रिका संवर्ग में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किए जाने की घोषणा की गई थी। दिनांक 13.01.2021 को वार्षिक पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पुरस्कार ग्रहण करते हुए सहायक महाप्रबंधक एवं अंचल श्री घनश्याम परमार जी एवं वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा सुश्री पूनम कुमारी प्रसाद।

दिनांक 15.12.2020 को आयोजित नराकास गाजीपुर की 13वीं ऑनलाइन छमाही बैठक में यूको बैंक, गाजीपुर शाखा को राजभाषा का कार्यांवयन सुनिश्चित कराने हेतु शाखा संवर्ग में **तृतीय पुरस्कार** से सम्मानित किए जाने की घोषणा की गई थी। दिनांक 22.12.2021 को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। पुरस्कार ग्रहण करते हुए शाखा प्रमुख श्री विश्वदीपक त्रिपाठी।

संरक्षक
श्री घनश्याम परमार
उप महाप्रबंधक
एवं
अंचल प्रमुख

संपादक मण्डल
श्री एस के सिन्हा
उप अंचल प्रमुख

वेद प्रकाश
मुख्य प्रबंधक

सुश्री पूनम कुमारी प्रसाद
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन
सुश्री पूनम कुमारी प्रसाद
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

इस अंक में........

क्र. सं.	विवरण	पृ. सं.
1	अंचल प्रमुख का संदेश	5-6
2	उप अंचल प्रमुख का संदेश	7
3	संपादकीय	8
4	भाषा जोड़ती है तोड़ती नहीं	9-11
5	राजभाषा संबंधी वार्षिक कार्यक्रम	12
6	भारतीय संविधान की आंठवी अनुसूची में शामिल भाषाओं की सूची	13
7	सतर्क भारत- समृद्ध भारत	14
8	सतर्कता जागरूकता सप्ताह- 2020	15-16
9	यूको बैंक का 78वां स्थापना दिवस समारोह	17
10	ऑटो एवं प्रापर्टी एक्सपो – 2021	18
11	घर में ऑक्सीजन का स्तर बढ़ाने वाले पौधें (इंडोर प्लांट्स)	19-21
12	कारोबारी उपलब्धियाँ	22-28
13	संस्कृत में वकालत करने वाले वाराणसी की शान अधिवक्ता आचार्य पंडित श्यामजी उपाध्याय	29
14	चंदौली जनपद को विश्व स्तर पर प्रसिद्धि दिलाने वाला चाको हाओ (काला धान)	30
15	मसाने की होली	31
16	संवेदनाएँ	32-33
17	9वां अखिल भारतीय यूको बैंक राजभाषा अधिकारी सम्मेलन	34
18	यूको बैंक जी. डी. बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला 2020-21	35-36
19	मुख्य वक्ता डॉ. वीरेंद्र प्रसाद सिंह का परिचय	37
20	यूको राजभाषा सम्मान एवं यूको मातृभाषा सम्मान 2020-21	38-39

संपर्क सूत्र
यूको बैंक, अंचल कार्यालय, वाराणसी,
धनश्री कॉम्प्लेक्स, प्रथम तल, डी - 63/8 1एम,
मौज़ा - तुलसीपुर, महमूरगंज, वाराणसी 221010
दूरभाष: 0542-2223323 ई-मेल: zo.varanasi@ucobank.co.in

पत्रिका में प्रकाशित विचार संबंधित रचनाकारों के अपने विचार है, उनसे संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

घनश्याम परमार
उप महाप्रबंधक
एवं
अंचल प्रमुख

अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय साथियो,

अंचल कार्यालय, वाराणसी की छमाही पत्रिका "यूको काशी अमृत" का 15वां अंक आपको समर्पित है। "यूको काशी अमृत" पत्रिका को अपना प्यार एवं स्नेह देने के लिए सभी को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। पत्रिका के माध्यम से हम वाराणसी अंचल की विशालता एवं विभिन्नता को यथासंभव समेटने का प्रयास करते हैं।

पत्रिका के इस अंक हेतु में प्रकाशन हेतु पंडित रामनरेश तिवारी"पिण्डीवासा" जी द्वारा लिखित "भाषा जोड़ती है तोड़ती नहीं" सामग्री प्राप्त हुई। हमारे लिए यह गर्व एवं सम्मान की बात है कि पंडित रामनरेश तिवारी"पिण्डीवासा" जी ने हमारी पत्रिका को अपना स्नेह दिया।

साथियो वित्तीय वर्ष 2020-21 के वार्षिक परिणामों की घोषणा हो चुकी है। परिणाम हम सभी के परिश्रम के अनुरूप सकारात्मक एवं बहुत ही अच्छा रहा है। वित्तीय वर्ष 2020-21 का हमारा कुल परिचालनगत लाभ रु. 5420 करोड़ रहा, जो पिछले वर्ष की तुलना से 12% अधिक है। बैंक ने इस उपलब्धि पर सभी यूकोजन को 10 दिन के पीएलआई का भुगतान किया। निश्चित रूप से हम सभी इसके हकदार थे। लेकिन हमें और अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है ताकि हमें 15 दिन का पीएलआई मिले। वित्तीय वर्ष 2021-22 में हमें यह चमत्कार कर दिखाना है।

वित्तीय वर्ष 2020-21 में बैंक का शुद्ध लाभ रु.167 करोड़, शुद्ध एनपीए रु.4399 करोड़ (3.94%) रहा। वित्तीय वर्ष 2020-21 में बैंक का ब्याज से कुल आय रु.14446 करोड़ तथा ब्याजेतर आय रु. 3720 करोड़ रहा। वित्तीय वर्ष 2020-21 में बैंक का कुल आय रु.18166 करोड़ रहा। सभी

साथियों दिनांक 14-16 जून, 2021 को संपन्न अंचलों की बजट समीक्षा बैठक "उड़ान" में हमें प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। तीन दिवसीय समीक्षा बैठक का मुख्य निष्कर्ष निम्नवत है -

- अनर्जक खातों में वसूली
- कासा वृद्धि
- गुणवत्तापूर्ण अग्रिम
- ऋण खातों को अनर्जक खातों में परिवर्तित होने से रोकना
- 15 दिनों के पीएलआई की प्राप्ति को ध्यान में रखकर समग्र विकास हेतु कार्य करना
- जेडएलसीसी स्तर पर ऋण प्रस्तावों की स्वीकृति
- सभी स्टाफ सदस्यों द्वारा 2 गृह ऋण प्रस्ताव दिया देना
- ब्याजेत्तर आय में वृद्धि
- सभी ग्राहकों को बैंक के डिजिटल उत्पादों में पंजीकृत कराना सुनिश्चित करना है।
- "डोर स्टेप बैंकिंग" योजना के तहत हमें अधिकतम संख्या में ग्राहकों को पंजीकृत करना है।
- सभी शाखाओं को वित्तीय वर्ष 2021-22 में चालू खाता क्षेत्र में रू.1 करोड़ की अतिरिक्त वृद्धि करनी है।
- प्रति शाखा को दैनिक आधार पर 5 नए बचत खातें खोलने हैं।

- प्रति माह मेट्रो एवं शहरी शाखाओं को 4 गृह ऋण एवं अर्ध शहरी एवं ग्रामीण शाखाओं को 2 गृह ऋण खातें खोलने हैं।
- ग्राहक शिकायत को शून्य रखना है।
- राजभाषा के क्षेत्र में भी सभी स्टाफ को टर्न अराउंड करना है। सभी स्टाफ को अपने कार्यालय एवं शाखा स्तर पर दैनिक कार्यालयीन कार्य 100% राजभाषा हिंदी में करना है। तभी हम राजभाषा संबंधी वार्षिक कार्यक्रम 2021-22 में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित कर सकते है।

साथियो हिंदी के प्रभावी प्रयोग को बढ़ाने के लिए सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने 12 “प्र” को अपनाने पर जोर दिया है:- प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम व स्नेह, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, पदोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास।

साथियो हमें अपने दैंदिन के कार्यालयीन कार्यों को अधिकतम संख्या में राजभाषा हिंदी में निष्पादित करना चाहिए। छोटे - छोटे प्रयासों के माध्यम से ही हम राजभाषा संबंधी वार्षिक कार्यक्रम के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित कर सकते हैं।

साथियो कोरोना का खतरा समाप्त नहीं हुआ है। अतः हमें पूर्व की भांति सावधानी बरतनी है। स्टाफ सदस्य शाखा स्तर पर सभी आवश्यक दिशानिर्देशों का पालन करना सुनिश्चित करें।

शुभकामनाओं सहित...........

(घनश्याम परमार)
उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख

संजय कु.सिन्हा
उप अंचल प्रमुख

उप अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय साथियो,

“यूको काशी अमृत” छमाही पत्रिका का 15वां अंक आपको समर्पित है। पत्रिका को नराकास (बैंक) वाराणसी द्वारा सम्मानित किया जाना, हमारे लिए सम्मान एवं गर्व का विषय है। पत्रिका किसी भी संस्था की गतिविधियों की वाहक होती है।पत्रिका में कारोबारी उपलब्धियों के साथ-साथ राजभाषा कार्यांवयन हेतु हमारे द्वारा वित्तीय वर्ष 2020-21 में संपन्न कार्यक्रमों की झलकियां भी समाहित है।

साथियो वाराणसी अंचल क्षेत्र विशेष की दृष्टि से विशाल एवं कारोबारी दृष्टि से अनंत संभावनाओं के स्वयं में समेटे हुए है। हमारी सभी शाखाएं बेहतर प्रदर्शन कर रही हैं। कोरोना वायरस की दूसरी लहर के दौरान भी सभी शाखाओं ने श्रेष्ठ प्रदर्शन किया।

साथियो हम सभी क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन करने हेतु प्रतिबद्ध है। कारोबार वृद्धि हमारी प्राथमिकता है। हमें शेष 9 में 12 माह का कार्य करना है। हमें रिटेल, एमएसएमई एवं कृषि क्षेत्र के तहत गुणवत्तापूर्ण ऋण संवितरित कर अपने अग्रिम पोर्टफोलियो में सुधार करना है। हमें दैनिक आधार पर एसएमए 2, 1 एवं 0 सूची में शामिल खातों में सुधार करना है। यूको वैक्सी - 999 योजना के तहत दैनिक आधार पर 5 खातें खोलने है। हमें दैनिक आधार पर डिजिटल उत्पादों (एम-बैंकिंग, एटीएम कार्ड एवं ई-बैंकिंग) के तहत अधिकतम संख्या में ग्राहकों को पंजीकृत करना है।

सभी स्टाफ सदस्य कोरोना के आवश्यक दिशानिर्देशों का पालन सुनिश्चित करें।

शुभकामनाओं सहित...........

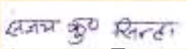

संजय कु. सिन्हा
उप अंचल प्रमुख

पूनम कुमारी प्रसाद
वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा

संपादकीय

साथियो,

वाराणसी अंचल की छमाही पत्रिका “यूको काशी अमृत” का अक्तूबर, 2020 - मार्च, 2021 अंक आपको समर्पित है। इस अंक में मानव जीवन में भाषा की स्थिति एवं महत्व पर पंडित रामनरेश तिवारी “पिण्डीवासा” जी का संदेश “भाषा जोड़ती है तोड़ती नहीं” शामिल है। पत्रिका में कारोबारी उपलब्धियों के साथ-साथ संकल्प राजभाषा के तहत यूको बैंक जी.डी. बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला, यूको राजभाषा सम्मान एवं यूको मातृभाषा सम्मान की झलकियाँ है।

वित्तीय वर्ष 2020-21 के हमारे बैंक के परिणाम ने निश्चित रूप से हम सभी यूकोजन में नई प्राण उर्जा का संचार किया है। सभी को बहुत- बहुत बधाई एवं चालू वर्ष 2021-22 हेतु शुभकामनाएं।

अप्रैल, 2021 माह में कोविड-19 की दूसरी लहर बहुत घातक तरीके से प्रभावी थी। लोगों की सुरक्षा हेतु सम्पूर्ण भारतवर्ष में लॉकडाउन लागू कर दिया था। हमारे कई साथी एवं उनके परिवार के सदस्य कोरोना संक्रमित भी हुए एवं स्वास्थ्य लाभ भी कर गए हैं। कोरोना से बचाव हेतु टीकाकरण के साथ-साथ दैनिक आधार पर सभी जरूरी दिशानिर्देशों का पालन अनिवार्य है।

सावधानी ही बचाव है। सावधान रहें, सुरक्षित रहें।

शुभकामनाओं सहित...........

(पूनम कुमारी प्रसाद)
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

पं रामनरेश तिवारी
“पिण्डीवासा”
सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति, वाणिज्य व पंचायतीराज मंत्रालय, भारत सरकार,
सदस्य रेल उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति, उ.प्र. रेलवे

भाषा जोड़ती है तोड़ती नहीं

भाषा का अर्थ है बोलना या कहना अर्थात भाषा वह है जिसे बोला जाए। भाषा अपने व्यापकतम् रूप में वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते है तथा विचारों और भावों को व्यक्त करते हैं। भाषा मानव के लिए अभिव्यक्ति का साधन है। मानव विकास के साथ-साथ नदी के प्रवाह की तरह भाषा का विकास भी आवश्यक है क्योंकि भाषा एक निरंतर प्रवाहमान वस्तु है इसलिए परिस्थितियों, संस्कृति और बदली भौगोलिक स्थिति के सामनांतर भाषा में भी निरंतर परिवर्तन होता रहता है। भाषा समाज की धरोहर होती है। भाषा ही व्यक्ति को समाज से जोड़ती है तथा समाज के मध्य एक प्रमुख कड़ी का काम करती है। व्यक्ति भाषा को समाज में ही रहकर सीखता है। जिन व्यक्तियों के बीच किसी बच्चें का पालन पोषण होता है उसी की भाषा के आधार पर उसकी भाषा का निर्माण होता है।

भाषा एक ऐसी जीवन ज्योति है जो एक व्यक्ति का दूसरे से संबंध स्थापित करती है। यदि मानव के पास भाषा जैसा अमोघ अस्त्र नहीं होता तो मनव भी पशु पक्षियों की भाँति अपने भावों एवं विचारों को प्रकट करने में असमर्थ रहता। भाषा को यदि मैं मानव शरीर में दैवी अंश के रूप में कहूँ तो गलत न होगा क्योंकि इस सृष्टि में मानव मात्र को ही यह दैवी अंश प्राप्त है। यह भाषा रूपी दिव्य ज्योति ही आपसी विचार विनिमय रूप में समस्त संसार में अपना प्रकश फैलाए हुए है। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं कि इस भाषा ज्योति के बिना संसार घोर अंधकारमय की स्थिति में होता। इस भाषा रूपी दैवी अंश के द्वारा ही मानव इस संसार में सर्वोत्तम माना जाता है। भाषा व्यक्ति की सबसे बड़ी शक्ति है और इससे अधिक मूल्यवान संपत्ति उसकी और कुछ नहीं हो सकती। कल्पना करें यदि मानव को भाषा संपर्क से दूर रखा जाए तो क्या उसका बहुमुखी विकास हो सकता है, शायद नहीं।

भाषा का जन्म कैसे हुआ, कब हुआ, भाषा कैसे विकसित हुई, इस सब की कहानी कम रोचक नहीं है किंतु यहाँ इतना ही उल्लेख करना चाहूँगा कि भाषाओं का इतिहास मानव के इतिहास से जुड़ा हुआ है। मानव जितना पुराना है भाषा भी उतनी पुरानी हो सकती है। भाषा की विकास कथा में किसी भी समाज का सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रतिविंब झलकता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी अहि और समाज में रहकर उसे अन्य व्यक्तियों से विचार विनिमय करना पड़ता है। विचार विनिमय माध्यम में भाषा सबसे प्रमुख घटक है।

भाषा विचारों की पोषक होती है। भाषा के बिना विचार आस्तित्वहीन होता है। भाषा और विचार का घनिष्ट संबंध है। एक के अभाव में दूसरे की कल्पना व्यर्थ है। विचारों के अभाव में भाषा का कोई महत्व नहीं होता और भाषा के अभाव में विचारों का भी कोई महत्व नहीं रह जाता। एमर्सन ने भाषा के महत्व पर लिखा है- “ भाषा एक नगर है जिसके निर्माण में प्रत्येक मानव एक पत्थर लाया है। भाषा संस्कृति की देन तो है ही साथ ही वह केवल संस्कृति की रक्षा ही नहीं करती अपितु उसे अगली पीढ़ी के लिए संरक्षित भी करती है। भाषा अपने विचार प्रकट करने एवं दूसरे के विचार सुनने का एक मात्र साधन है। भाषा का प्रयोग हम आवश्यकतानुसार कभी बोल कर सकते है या कभी लिख कर। भाषा का बोला गया रूप मौखिक और लिखा गया। रूप लिखित कहलाता है। भाषा के विशेष के लिए उस भाषा का व्याकरण आवश्यक होता है। व्याकरण का ज्ञान न होने से न तो हम शुद्ध बोल सकते हैं और न लिख सकते हैं। व्याकरण ही भाषा की रक्षा करता है। विद्वानों का भी मत है कि व्याकरण भाषा रूपी नौका के परवार के समान है।

भाषा परिवर्तनशील होती है। प्रत्येक भाषा की एक भौगोलिक/ऐतिहासिक सीमा होती है तथा उसकी संरचना अलग - अलग होती है। भाषा की धारा स्वभावतः कठिनता से सरलता की ओर जाती है अर्थात भाषा स्थूलता से सूक्ष्मता, अप्रोढ़ता से प्रोढ़ता तथा संयोगावस्था से वियोगावस्था की ओर जाती है। हर भाषा का स्पष्ट या अस्पष्ट एक मानक रूप होता है। इसके अलावा भाषा के विविध रूप होते हैं। जैसे मूल भाषा, व्यक्ति भाषा, आदर्श या परिनिष्ठित भाषा, राष्ट्रभाषा, विशिष्ट भाषा, कृत्रिम भाषा, गुप्त भाषा, सामान्य भाषा आदि। भाषा के अन्य रूप में साहित्यिक भाषा, सहायक भाषा आदि आती है। भाषा की विशेषता यह है कि यह अर्जित संपति है, पैतृक नहीं। भाषा परम्परागत है और व्यक्ति उसका अर्जन कर सकता है उसे उत्पन्न नहीं कर सकता। भाषा चिर- परिवर्तनशील है और इसका कोई अंतिम स्वरूप नहीं है।

भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन भाषा विज्ञान है। वैज्ञानिक अध्ययन से तात्पर्य भाषा के बाहरी और भीतरी रूप एवं विकास आदि का सम्यक अध्ययन है।इसी प्रकार भाषा के दो आधार है एक मानसिक और दूसरा भौतिक। मानसिक आधार भाषा की आत्मा है तो भौतिक आधार उसका शरीर। भाषा का भवन इसी पर खड़ा है। भाषा वैज्ञानिकों ने एक भाषा से निकली और विकसित हुई भाषाओं को एक परिवार माना है। इस प्रकार भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से संसार में लगभग 12 भाषा परिवार है। हिंदी और अंग्रेजी एक ही भाषा परिवार के हैं। गणना करने वालों के अनुसार विश्व में लगभग 5000 भाषाएं और भारत में लगभग 1653 भाषाएं हैं।

संसार की भाषाओं का वर्गीकरण कई आधारों पर किया जाता है। महाद्विप के आधार पर जैसे एशिया, यूरोपीयन, अफ्रीकी भाषाएं। देश के आधार पर चीनी या भारतीय भाषाएं, धर्म के आधार पर हिंदू, मुस्लिम, ईसाई भाषाएँ। काल के आधार पर प्राचीन, मध्ययुगीन, आधुनिक भाषाएँ। परिवार के आधार पर यूरोपीय एवं द्रविड़ परिवार की भाषाएँ। प्रभाव के आधार पर संस्कृत एवं फारसी प्रभावित भाषाएं आदि। विश्व में जितनी भी भाषाएं बोली जाती हैं उनमें से मात्र 12 भाषाएँ साहित्यिक महत्व की मानी जाती हैं। यदि बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से देखें तो संसार में पहला स्थान चीनी भाषा का दूसरा अंग्रेजी और तीसरा हिंदी का है। हिंदी भाषा का प्रचलन भारत, नेपाल, मलेशिया, इण्डोनेशिया, सूरिनाम, फिजी, गुयाना, मॉरिशस, त्रिनिदाद आदि लगभग पचास देशों में है।

भाषा वैज्ञानिकों का कथन है कि कोई भी भाषा अविकसित नहीं होती। प्रत्येक भाषा अपने परिवेश अपने समाज की संस्कृति और उस समाज के लोगों के भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने में पूर्णयता समर्थ होती है। किसी टापू, जंगल या पहाड़ पर बसने वाले लोगों की भाषा भी भले ही हमें पिछड़ी हुई लगती हो, लेकिन उन लोगों के व्यवहार के लिए पर्याप्त है। जब वहाँ लोग अन्य संस्कृतियों के सम्पर्क में आते हैं तब उनकी भाषा में नये तत्व आने लगते हैं। जीवित भाषा किसी जीव की तरह निरंतर विकसित होती रहती है। उसका शब्द भंडार रूप विधान और अभिव्यक्ति का प्रकार बढ़ता रहता है। वह अनावश्यक तत्वों को छोड़ती जाती है और आवश्यक व वांदनीय तत्व ग्रहण करती रहती है परंतु यह बहुत कुछ निर्भर करता है उसकी सांस्कृतिक प्रगति पर उसकी भौतिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं पर।

भाषा और आदत का भी घनिष्ठ संबंध है। कहावत है आदत दूसरा स्वभाव बन जाती है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है और अपने इतिहास तथा परंपरा से विछिन्न है। परस्पर विचारों का आदान-प्रदान पहले कभी इशारों चिन्हों और जानी-पहचानी ध्वनियों से किया जाता था लेकिन भाषा ध्वनि संकेतों की वह पद्धति है जिसके द्वारा मानव परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करता है।

भाषा एक पद्धति है, सुव्यवस्थित योजना का संगठन है जिसमें कर्ता, क्रिया व्याव्स्थित रूप में आ सके और व्याकरण के आधार पर लिखने या बोलने में जिसका बोध हो सके। बोली भाषा की छोटी ईकाई है। किसी ने ठीक ही कहा है –

"भाषा की लहरों में जीवन की हलचल है।
ध्वनि में क्रिया भरी है और क्रिया में बल है ॥"

भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है। भाषा वह व्यवस्था है जिसके द्वारा समाज विशेष के लोग आपस में विचार विनिमय करते हैं। भाषा हमें एक दूसरे से जोड़ती है। इसके माध्यम से हम न केवल अपने परिवार व समाज से जुड़ते है बल्कि इससे अपनी पहचान भी स्थापित करते हैं। कोई भी भाषा तभी तक चहुँमुखी विकास कर पाती है जब तक उसका सम्पर्क आम जनता से रहता है। जीवित भाषा निरंतर विकासशील रहती है। भाषा लिखी जाती है, बोली जाती है और सुनी जाती है। यह मन और इन्द्रियों का व्यापार है। भाषा सहज रूप में समाज को जोड़ती है।

भाषा का आयाम बहुत विस्तृत है तथा वह अभ्यास की वस्तु है। भाषा का सवाल सिर्फ माध्यम का सवाल नहीं है बल्कि संस्कृति का सवाल है। भाषा से ही संस्कृति है और संस्कृति से राष्ट्र बनता है। आचार्य नरेन्द्र देव का कहना है - "संस्कृति चिंतन की खेती है।" भाषा ही मानवीय मूल्यों नैतिकता और सामजिकता का सक्रिय बोध कराती है। भाषा हमारे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विकास का कार्य करती है। निःसंकोच यह कह सकते हैं कि भाषा विकास का फल भी है और बीज भी। भाषा समाज के बीच एक पुल का काम करती है इसलिए वह व्यक्ति को समाज से जोड़ती है तोड़ती नहीं।

राजभाषा संबंधी वार्षिक कार्यक्रम

(संघ का वार्षिक कार्य हिंदी में करने के लिए)

- संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतराष्ट्रीय रूप है {संविधान का अनुच्छेद 343 (1)}। परन्तु हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी सरकारी कामकाज में किया जा सकता है (राजभाषा अधिनियम की धारा 3)।
- संसद का कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जा सकता है। परन्तु राज्यसभा के सभापति महोदय या लोकसभा के अध्यक्ष महोदय विशेष परिस्थिति में सदन के किसी सदस्य को अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुमति दे सकते हैं। {संविधान का अनुच्छेद 120}
- किन प्रयोजनों के लिए केवल हिंदी का प्रयोग किया जाना है, किन के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग आवश्यक है और किन कार्यों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाना है, यह राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976 और उनके अंतर्गत समय समय पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की ओर से जारी किए गए निदेशों द्वारा निर्धारित किया गया है।

बैंकिंग शब्दावली

व्युत्पन्नी जमा	Derivative deposit
ब्याज रहित	Ex coupon
नकदी, नकद राशि	Hard cash
अनुशेष भुगतान	Addenda payment
समझौता/बेचान शुल्क	Negotiation fee
प्रतिधारिता लाभ	Retained profit
अनिधिक कर्ज	Unfunded debt
व्यपदेशन /अभ्यावेदन /प्रतिनिधित्व	Representation
समष्टि प्रभाव	Macro implications
अस्थिर बैंक मुद्रा	Wild cat money
विशेषज्ञ का निवेश	Smart money
योजना को प्रायोगिक तौर पर चलाकर देखना	Mock run of Scheme

बैंकिंग टिप्पणी

कुल संस्वीकृत राशि जारी कर दी गई है	Total Sanctioned amount has been released
जारी की जाने वाली कुल राशि की स्वीकृत दे दी गई है	Total released amount has been sanctioned
न्यूनतम शेष अवश्य रखा जाए	Minimum balance must be maintained
पैसा उचंत खाते में पड़ा हुआ है	Fund is lying in suspense account
चेक का भुगतान वाहक को किया जाएगा	Bearer of the cheque will get the payment.
देनदार को नोटिस दिया जाए	Serve a notice to the debtor
औपचारिक मंजूरी प्राप्त करें	Obtain formal sanction
विचार हेतु प्रस्तुत	Submitted for consideration
चेक पर पृष्ठांकन ठीक से नहीं किया गया	Endorsement on the cheque is not in order
काइट फ्लाइंग लेनेदेन, चेकों के शोधन में हेराफेरी करना,	Kite flying operations
एकबारगी निपटान के लिए ऋणी को बुलाएं	Please call the borrower for one - time settlement

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं की सूची

क्र. सं.	भाषा	मुख्य रूप से किस राज्य में बोली जाती है	मान्यता प्राप्त वर्ष
1	असमिया	असम	1950
2	बंगाली	पश्चिम बंगाल	1950
3	बोडो	असम, पश्चिम बंगाल	2003
4	डोगरी	जम्मू, हिमाचल प्रदेश	2003
5	गुजराती	गुजरात	1950
6	हिंदी	उत्तरी भारत के अधिकांश भागों में	1950
7	कश्मीरी	जम्मू एवं कश्मीर	1950
8	कन्नड़	कर्नाटक	1950
9	कोंकणी	गोवा और कर्नाटक के कुछ क्षेत्रों में	1992
10	मलयालम	केरल	1950
11	मणिपुरी	मणिपुरी	1992
12	मराठी	महाराष्ट्र	1950
13	मैथिली	बिहार के कुछ हिस्से में	2003
14	नेपाली	सिक्किम और पश्चिम बंगाल के कुछ हिस्से में	1992
15	उड़िया	ओडिशा	1950
16	पंजाबी	पंजाब, चंडीगढ़	1950
17	संस्कृत	हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की जननी है।	1950
18	सिंधी	गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र में	1967
19	संथाली	झारखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल में संथाली जनजाति द्वारा बोली जाती है	2003
20	तमिल	तमिलनाडु, पुडुचेरी	1950
21	तेलुगु	तेलगांना और आंध्र प्रदेश	1950
22	उर्दू	उत्तरी भारत	1950

सुविचार

उत्तम से सर्वोत्तम वही हुआ है जिसने आलोचनाओं को सुना और सहा है।

दुनिया के डर से अपने फैसले बदलने वाले अक्सर नाकामयाब लोग होते हैं।

बिना परखे सबको अच्छा समझ लेना भी एक बुरी आदत साबित हो सकती है।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में वहाँ के लोगों के उत्साह एवं निष्ठा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। राष्ट्र के लोग जब आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प के साथ अपने किसी लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं तो उस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए समुचित साधनों, तकनीकों और व्यवस्थाओं आदि का सर्जन सहज ही करते चले जाते हैं। वैश्विक परिस्थिति को समझने और परिस्थिति में अपनी राष्ट्रीय अस्मिता को प्रतिष्ठापित करने और आवश्यक उद्यम करने में पूरी दुनिया में जागृत और सतर्क भारत की कोई बराबरी नहीं है। दुनिया के समृद्ध, शक्तिशाली और शिक्षित देशों के मुकाबले भारत के गरीब, कमजोर और ग्रामीण अशिक्षित जनता ने जिस तरह से 'कोरोना' महामारी के खिलाफ जंग लड़ी है वह विश्व के लिए एक उदाहरण है। अनुकरण करने के बजाय, हम भारतीय अनुकरणीय बनाना पसंद करते है।

भारत की संस्कृति व सभ्यता, वैचारिक उन्नतिशीलता व संवेदनशीलता तथा आध्यात्मिक पवित्रता व निर्मलता इसे समृद्ध बनाती है। वसुधैव कुटुंबकम् की परम्परा वाले हमारे देश ने विश्व को एक परिवार के रूप में समझा और सदा ही पूरी दुनिया की भलाई का पक्षधर रहा, इसीलिए भारत को शांति दूत भी कहा गया है। यही वैश्विक पारिवारिकता की भावना भारत की आत्मा है, जिसे बनाए रखने के लिए भारत कृत-संकल्प है। भारत की भौतिक समृद्धि उसकी जलवायु, हरी-भरी उपजाऊ जमीन,जंगल, पहाड़ और यहाँ के खनिजों से है। यहाँ की ऋतुएं और यहाँ के किसान धरती से सोना उपजाते हैं। हमारे अन्न भंडार हमेशा भरे रहते हैं। विश्व में किसी भी तरह की प्राकृतिक आपदा में हमारा देश हमेशा से लोगों की मदद करता आ रहा है। पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, स्वास्थ्य और आध्यात्मिकता, वैज्ञानिक पद्धति से खेती की ओर पूरी निष्ठा और सतर्कता से नित नए बढ़ते कदम, इसे कृषि जनित नई ऊँचाइयों की ओर ले जा रहे हैं। कई सौ सालों तक गुलाम रहने के बावजूद भारत देश आज भी मजबूत और शक्तिशाली है।

दुनिया में सर्वाधिक युवा शक्ति वाले हमारे देश के जांबाज सैनिकों की शूर वीरता के चलते हमारी सीमाएं सदा सुरक्षित हैं। अपनी सीमाओं की सुरक्षा के प्रति विशेष सतर्कता के चलते हमारी सेनाएं आज अत्याधुनिक उपकरणों, मिसाइलों, लड़ाकू जहाजों, विमानों, पनडुब्बियों से सुसज्जित हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत की सामरिक शक्ति कई गुना बढ़ गई है

कश्मीर से कन्याकुमारी तक थल सेना, नौसेना और वायुसेना हर मोर्चे पर हमारी सीमाओं की अनवरत रक्षा कर रही है, तभी तो हम अपने घरों में चैन से सोते हैं। कूटनीति और विदेश नीति में भारत आज अव्वल है। हर आम व्यक्ति की सुख-सुविधा को लेकर भी भारत पूरी तरह से सतर्क है, मुस्तैद है। गाँव को शहर से और शहर को महानगरों से जल, थल, वायु मार्गों से जोड़ने का बेजोड़ काम किया जा रहा है, इससे ग्रामीण,दूर-दराज व आदिवासी सभी क्षेत्रों में सबका साथ और सबका विकास प्रबल हो रहा है। गरीबों, श्रमिकों, किसानों, हर तबके के पास सूचना-प्रौद्योगिकी की पहुँच से, उनको सक्षम बनाने के लिए बनाई गई समूची योजनाएं सुविधापूर्वक, आसानी से व सार्थकतापूर्वक लागू हुई हैं, जिससे आत्मनिर्भरता बढ़ी है। ज्ञान-विज्ञान, पर्यावरण, सुरक्षा आदि सभी क्षेत्रों में समय रहते सतर्कता के चलते सशक्त, सम्पन्न व समृद्ध भारत की परिकल्पना साकार हो रही है।

पूनम कुमारी प्रसाद
वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा
अंचल कार्यालय, वाराणसी

सतर्कता जागरूकता सप्ताह - 2020

27.10.2020 से 02.11.2020

दिनांक 27.10.2020 को अंचल कार्यालय, वाराणसी में शपथ ग्रहण कार्यक्रम

अंचल कार्यालय, वाराणसी में दिनांक 28.10.2020 को निवारक सतर्कता पर वेबिनार

दिनांक 29.10.2020 को एसवीएम आर्यनगर, गोरखपुर शाखा द्वारा सरस्वती विद्या मंदिर विद्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2020 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में शाखा प्रमुख श्री आर पी सिंह जी ने अपनी उपस्थिति सुनिश्चित की।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत अंचल कार्यालय, वाराणसी एवं शिवपुर शाखा द्वारा संत अतुलानन्द कान्वेंट स्कूल में दिनांक 02.11.2020 को सतर्क भारत समृद्ध भारत विषयक ऑनलाइन पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें 40 से ज्यादा बच्चें ऑनलाइन शामिल हुए। अंचल प्रमुख श्री घनश्याम परमार जी ने सभी प्रतिभागियों को संबोधित कर उनको प्रोस्ताहित किया।

दिनांक 02.11.2020 अंचल कार्यालय, वाराणसी एवं शिवपुर शाखा द्वारा संत अतुलानंद कॉवेंट स्कूल, कोईराजपुर में ऑनलाइन पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई थी।

यूको बैंक का 78वां स्थापना दिवस समारोह

दिनांक 06.01.2021 को अंचल कार्यालय, वाराणसी द्वारा यूको बैंक के स्थापना दिवस के अवसर पर अस्सी घाट पर कंबल वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

शाखाओं द्वारा आयोजन

जगतपुर शाखा द्वारा वृक्षारोपण

महमूरगंज शाखा द्वारा स्वास्थ्य जांच शिविर

म्योरपुर शाखा

क्रिकेट एवं बैडमिंटन लीग का आयोजन

स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में अंचलाधीन स्टाफ के लिए संत अतुलानंद कॉवेंट स्कूल, कोईराजपुर में क्रिकेट एवं बैडमिंटन लीग का आयोजन किया गया।

ऑटो एवं प्रॉपर्टी एक्सपो - 2021

दिनांक 5, 6 एवं 7 मार्च, 2021 को दैनिक जागरण समूह द्वारा वाराणसी के कैंटोंमेंट ग्राउंड पर ऑटो एवं प्रॉपर्टी एक्सपो - 2021 का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में वाराणसी नगर स्थित ऑटो एवं प्रॉपर्टी उद्योग से जुड़े व्यापारी शामिल हुए।

वाराणसी नगर स्थित सभी बैंकों ने तीन दिवसीय कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित की। यूको बैंक, अंचल कार्यालय, वाराणसी ने भी यूको बैंक के उत्पादों के विज्ञापन हेतु स्टाल लगाया। कार्यक्रम के दौरान व्यापारी समूहों से यूको बैंक को सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई।

श्री रविंद्र जैसवाल, मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार (स्वतंत्र प्रभार) द्वारा यूको बैंक को एक्सपो- 2021 में सक्रिय भागीदारी के लिए पुरस्कृत किया गया। श्री समीर पत्री, सहायक प्रबंधक, विपणन पुरस्कार ग्रहण करते हुए।

घर में ऑक्सीजन का स्तर बढ़ाने वाले पौधें (इंडोर प्लांट्स)

कोरोना वायरस की दूसरी लहर ने लोगों को तोड़ कर रख दिया। जिस पर मुसीबत आई उसने इतना तो समझ लिया कि जिंदगी खूबसूरत है लेकिन जीना आसान नहीं। दूसरी लहर चरम के समय में अफवाहों का दौर भी हावी रहा। उस वक्त लोग ऑक्सीजन के लिए इतने घबराए हुए थे कि इलाज के लिए जिसने जो ज्ञान दिया मान लिया।

कोरोना की दूसरी लहर जब शीर्ष थी उस समय अस्पताल में भी जगह नहीं थी। चारों तरफ हंगामा मचा हुआ था। ना डॉक्टर ओपीडी में बैठ रहे थे ना मरीज देख रहे थे। ऑक्सीजन सिलेंडर के लिए अलग त्राहिमाम मचा था।

इस विकट परिस्थिति में अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा ने उन पौधों (आक्सीजन प्लांट) के बारे में जानकारी दी है जिन्हें घर में लगाने से ऑक्सीजन का स्तर सही रहता है। जिन्हें आप अपने कमरे में भी रख सकते हैं। वैसे तो इंडोर प्लांट्स घर में रखने से प्रदूषण से राहत मिलती है और दिमाग भी शांत रहता है। तनाव भी कम रहता है। तो चलिए जानते हैं कि नासा ने जिन पौधों के बारे में बताया है वे कौन-कौन से हैं और इस कोरोना काल में किस तरह हमारे लिए फायदेमंद हैं।

एरिका पाम प्लांट - एरिका पाम प्लांट रखना काफी फायदेमंद होता है। आप इसे लिविंग रूम में रख सकते हैं। एरिका हवा में मौजूद फॉर्मेल्डिहाइड, जाइलीन और टोलुइन को सोखने की क्षमता रखता है। इस पौधे के लिए हल्की रोशनी और कम पानी की जरूरत होती है।

स्नेक प्लांट - स्नेक प्लांट में खास बात यह है कि ये पौधा रात के समय भी ऑक्सीजन उत्पन्न करता है। कई लोग इसे सास की जुबान भी बोलते है। इस पौधे में बेनजेन, फॉर्मेल्डिहाइड, ट्राईक्लोरोएथिलीन, ट्राइक्लोरो, जाइलीन, टोलुइन जैसी जहरीली गैसों को सोखने की क्षमता होती है। इसे सप्ताह में एक बार पानी की जरूरत होती है। वहीं यह खिड़की से आने वाली रोशनी से भी आसानी से पनप जाता है।

मनी प्लांट - मनी प्लांट काफी कम रोशनी में भी ऑक्सीजन तैयार करता है। यह बेनजेन, फॉर्मेल्डिहाइड, जाइलीन, टोलुइन और ट्राई क्लोरो एथिलीन जैसी जहरीली गैसों को सोख लेता है। इस पौधे को बच्चों और जानवरों से दूर रखने की सलाह दी जाती है। गलती से अगर किसी बच्चे या जानवर ने इसे खा लिया तो उल्टी-दस्त की समस्या हो सकती है। इसे हफ्ते में एक बार पानी देने की जरूरत होती है। मनी प्लांट को बोतल या खाली बर्तन में पानी भरकर भी लगा सकते हैं।

गरबेरा डेजी - गरबेरा डेजी भी रात में ऑक्सीजन बनाता है। यह खूबसूरत होता है और यह घर की सजावट के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। नासा की एक रिसर्च के अनुसार यह पौधा वातावरण से बेनजेन और ट्राई क्लोरो एथिलीन को सोख लेता है। इस पौधे को सीधे सूर्य की रोशनी की जरूरत होती है। इसे धूप में रखने के साथ ही रोज पानी की जरूरत होती है।

चाइनीज एवरग्रीन - चाइनीज एवरग्रीन पौधा अक्सर लोगों के घरों में देखने को मिल जाता है। यह पौधा कम रोशनी और 18-27 डिग्री सेल्सियस के बीच आसानी से पनप जाता है। यह सिर्फ तीन फीट तक ऊंचा हो सकता है। इसकी पत्तियां बड़ी-बड़ी होती हैं। यह पौधा वातावरण से बेनजेन और फॉर्मेल्डिहाइड को सोखने की क्षमता रखता है। इसे जानवरों से दूर रखें और हफ्ते में एक बार पानी दें।

स्पाइडर (रिबन प्लांट) - स्पाइडर को रिबन प्लांट के नाम से जाना जाता है। इस पौधे की खासियत यह है कि इसकी ऊंचाई लगभग दो फीट तक होती है। यह 2 डिग्री सेल्सियस तक की ठंड को भी सहन कर लेता है। इसके लिए अच्छा तापमान 18 डिग्री से 32 डिग्री सेल्सियस तक माना जाताहै। यह पौधा वातावरण से काफी तेजी से कार्बन मोनोऑक्साइड और जाइलीन जैसी गैसों को सोख लेता है। इसे हफ्ते में एक बार पानी देना चाहिए।

एलोवेरा - एलोवेरा का पौधा औषधीय पौधा है जो हमारे बहुत काम आता है। आयुर्वेद में इसके औषधीय गुणों का उल्लेख मिलता है। इसके जेल का उपयोग हम रसोईघर, सुंदरता एवं स्वास्थ्य लाभ के लिए करते हैं। एलोवेरा की पत्तियां आसपास के वातावरण से वार्निश, फ्लोर वार्निश और डिटर्जेंट्स में पाए जाने वाले बेनजन और फॉर्मेल्डिहाइड को सोख लेती हैं। एलोवेरा धूप में अच्छी तरह पनपता है लेकिन इसे पानी की ज्यादा जरूरत नहीं होती।

ब्रॉड लेडी - ब्रॉड लेडी को बम्बू पाम भी कहा जाता है। इसकी खासियत यह है कि ये क्लीनिंग प्रोडक्ट्स में पाए जाने वाली अमोनिया गैस को सोख लेता है। साथ ही यह वातावरण से बेनजेन, फॉर्मेल्डिहाइड, जाइलीन और ट्राई क्लोरो एथिलीन को भी कम करने की क्षमता रखता है। यह हवा को तो साफ करने के साथ ही उसमें ऑक्सीजन की मात्रा को भी बढ़ाता है। इसकी ऊंचाई 4 मीटर बढ़ सकता है। पत्तों का रंग फीका ना पड़े इसलिए इसे छांव वाली जगह पर रखें और रोज पानी दें।

ड्रैगन ट्री - ड्रैगन ट्री को रेड-एज ड्रेसिना भी कहा जाता है। यह पौधा हमेशा हरा-भरा रहता है। ड्रैगन ट्री की खासियत की बात करें तो यह बेनजेन, फॉर्मेल्डिहाइड, जाइलीन, टोलुइन और ट्राई क्लोरो एथिलीन को सोख लेता है। इस पौधे को सूरज की रोशनी जरूरत होती है इसलिए इसे धूप में रखा जाता है। पानी इसकी मिट्टी में नमी के अनुसार ही दें।

वीपिंग फिग - वीपिंग फिग पौधे प्राकृतिक रूप से 20 मीटर तक ऊंचा हो सकता है। दरअसल, इसके तनों से ही जड़ें निकलने लगती हैं, जो लटकते हुए जमीन तक पहुंच जाती हैं और खुद एक अलग तना बन जाती हैं। इसकी नीचे लटकती पत्तियों को देखकर ऐसा लगता है जैसे आंसू टपक रहे हों। इसी कारण इसका नाम वीपिंग ट्री दिया गया। इसकी खासियत यह है कि आस-पास के वातावरण में मौजूद फॉर्मेल्डिहाइड, जाइलीन और टोलुइन को सोखने की क्षमता रखता है। साथ ही कार्बन डाइऑक्साइड को सोख कर तेजी से ऑक्सीजन छोड़ता है। जानकारी के अनुसार इसकी जड़ें गमले या जमीन में बहुत तेजी से फैलती हैं। जो बगीचे या मिट्टी के गमले को नुकसान पहुंचा सकती है। वहीं पालतू जानवरों को इस पौधे से दूर रखें क्योंकि जानवरों को इससे एलर्जी हो सकती है।

इसलिए इनमें से जो पौधा आपको आसानी से उपलब्ध हो उसे घर में जरूर रखें। घर में पौधा लगाने से सकारात्मकता भी बढ़ती है।

वेद प्रकाश
मुख्य प्रबंधक
अंचल कार्यालय, वाराणसी

कारोबारी उपलब्धियाँ

वित्तीय वर्ष 2020-21 के दौरान श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली शाखाएं

सभी क्षेत्रों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली टॉप तीन शाखाएं

चाँदपुर (0612)

साहिल सुमन, वरिष्ठ प्रबंधक

प्रतापपुर (1116)

श्री शिखरेश मुखोपाध्याय, वरिष्ठ प्रबंधक

खुसरोबाग (1919)

सुश्री प्रतीमा, वरिष्ठ प्रबंधक

कासा में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली टॉप तीन शाखाएं

महमूरगंज (1922)

श्री राजेश कुमार राय, प्रबंधक
राशि रु. 2279 लाख

खुसरोबाग (1919)

सुश्री प्रतीमा, वरिष्ठ प्रबंधक
राशि रु. 1500 लाख

प्रतापगढ़ (2426)

श्री ललित नारायण पांडेय, वरिष्ठ प्रबंधक
राशि रु. 1292 लाख

रिटेल में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली टॉप तीन शाखाएं

मंफोर्डगंज (1611)

श्री आकेश निरंजन, वरिष्ठ प्रबंधक
राशि रु. 688 लाख

नैनी (0750)

श्री वीरेंद्र सिंह यादव, वरिष्ठ प्रबंधक
राशि रु. 617 लाख

प्रीतम नगर (1978)

श्री संदीप खन्ना, वरिष्ठ प्रबंधक
राशि रु. 347 लाख

कृषि में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली टॉप तीन शाखाएं

प्रतापपुर (1116)

श्री शिखरेश मुखोपाध्याय, वरिष्ठ प्रबंधक
राशि रु. 103 लाख

चोपन (0651)

श्री अभिनव सोलंकी, वरिष्ठ प्रबंधक
राशि रु. 80 लाख

घोरावल (0652)

श्री अंकुर श्रीवास्तव, वरिष्ठ प्रबंधक

राशि रु. 75 लाख

कुल अग्रिम में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली टॉप तीन शाखाएं

नैनी (0750)

श्री वीरेंद्र सिंह यादव, वरिष्ठ प्रबंधक
राशि रु. 741 लाख

मंफोर्डगंज (1611)

श्री आकेश निरंजन, वरिष्ठ प्रबंधक
राशि रु. 598 लाख

भदोही (0083)

श्री राहुल रंजन, मुख्य प्रबंधक
राशि रु. 470 लाख

एपीवाई में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली टॉप तीन शाखाएं

म्योरपुर (0935)

श्री शैलेश कुमार पांडेय, प्रबंधक
255 खातें

प्रतापपुर (1116)

श्री शिखरेश मुखोपाध्याय, वरिष्ठ प्रबंधक
160 खातें

शाहपुर (1699)

श्री प्रेम रंजन कुमार, प्रबंधक
159 खातें

एसबीआई लाइफ इंश्योरेंश में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली टॉप तीन शाखाएं

चोपन (0651)

श्री अभिनव सोलंकी, वरिष्ठ प्रबंधक
राशि रु. 16 लाख

घोरावल (0652)

श्री अंकुर श्रीवास्तव, वरिष्ठ प्रबंधक
राशि रु. 15 लाख

नगर महापालिका (0694)

श्री अमित कुमार यादव, वरिष्ठ प्रबंधक
राशि रु. 15 लाख

नकद वसूली में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली टॉप तीन शाखाएं

रेणुकूट (0143)

श्री चंद्रेश शुक्ला, मुख्य प्रबंधक
राशि रु.1.68 करोड़

सुल्तानपुर (1900)

श्री विजय कुमार सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक
राशि रु.1.44 करोड़

खुसरोबाग (1919)

सुश्री प्रतीमा, वरिष्ठ प्रबंधक
राशि रु.1.27 करोड़

गृह ऋण में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली टॉप तीन शाखाएं

चाँदपुर (0612)

साहिल सुमन, वरिष्ठ प्रबंधक
25 खातें - 613 लाख

मलदहिया (2204)

श्रीमती रजनी कुमारी, वरिष्ठ प्रबंधक
20 खातें - 501 लाख

सुंदरपुर (2351)

श्री अवधेश नारायण लाल, वरिष्ठ प्रबंधक
20 खातें - 327 लाख

वाहन ऋण में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली टॉप तीन शाखाएं

रेणुकूट (0143)
श्री चंद्रेश शुक्ला मुख्य प्रबंधक
24 खाता - रु. 252 लाख

रेणुसागर (0732)
श्री आकाश जहीर, वरिष्ठ प्रबंधक
14 खाता - रु. 93 लाख

नगर महापालिका (0694)
श्री अमित कुमार यादव, वरिष्ठ प्रबंधक
13 खाता - रु. 94 लाख

चालू जमा में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली टॉप तीन शाखाएं

भेलुपुर (0613)
श्री आशुतोष श्रीवास्तव, मुख्य प्रबंधक
राशि रु. 1518 लाख

खुसरोबाग (1919)
सुश्री प्रतीमा, वरिष्ठ प्रबंधक
राशि रु. 1500 लाख

इलाहाबाद मुख्य (0032)
श्रीमती प्रियंका यादव, मुख्य प्रबंधक
राशि रु. 454 लाख

बचत जमा में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली टॉप तीन शाखाएं

महमूरगंज (1922)
श्री राजेश कुमार राय, प्रबंधक
राशि रु. 2498 लाख

भिटिरावत (1698)
श्री अमरेंद्र हजारी, प्रबंधक
राशि रु. 1534 लाख

प्रतापगढ़ (2426)
श्री ललित नारायण पांडेय , वरिष्ठ प्रबंधक
राशि रु. 1507 लाख

एमएसएमई में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली टॉप तीन शाखाएं

पांडेयपुर (2011)

श्री शम्भु कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक
राशि रु. 92 लाख

ज्ञानपुर (3261)

श्री आशुतोष कुमार सिंह, प्रबंधक
राशि रु. 69 लाख

अंबेडकरनगर (2859)

श्री जयशंकर पांडेय, प्रबंधक
राशि रु. 67 लाख

गृह ऋण लीड में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले टॉप तीन स्टाफ सदस्य

श्री राजकुमार पांडेय

वरिष्ठ प्रबंधक, अंचल कार्यालय, वाराणसी
(6 लीड)

श्री साहिल सुमन

वरिष्ठ प्रबंधक, चाँदपुर
(5 लीड)

सुश्री शिखा सिंह

प्रबंधक, प्रतापगढ़
(5 लीड)

एम बैंकिंग में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली टॉप तीन शाखाएं

प्रतापगढ़ (2426)

श्री ललित नारायण पांडेय , वरिष्ठ प्रबंधक

मदरिया (1700)

श्री ब्रजेश कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक

वाराणसी मुख्य (0034)

श्री अवधेश कुमार गुप्ता, मुख्य प्रबंधक

डेबिट कार्ड में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले टॉप तीन स्टाफ सदस्य

गोला बाजार (1976)

श्री अमित कुमार, प्रबंधक

म्योरपुर (0935)

श्री शैलेश कुमार पांडेय, प्रबंधक

उर्वा बाजार (0550)

श्री विवेकानंद सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक

वित्तीय वर्ष 2020-21 के दौरान कार्यालय/शाखा के खर्च में कटौती करने वाली टॉप तीन कार्यालय/शाखा

अंचल कार्यालय, वाराणसी (7036)

श्री बिपिन सिंह, प्रबंधक सामान्य प्रशासन विभाग
(रु. 10.74 लाख)

वाराणसी मुख्य (0032)

श्री अवधेश कुमार गुप्ता, मुख्य प्रबंधक
(रु. 5.46 लाख)

सुजानगंज (2124)

श्री अख्तर रईस, प्रबंधक
(रु. 4.32लाख)

वित्तीय वर्ष 202-21के दौरान में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विभाग (स्मार्ट एपीआर)

कासा - रु. 73 करोड़

श्री रवि प्रताप सिंह, प्रबंधक

अंचल कार्यालय, वाराणसी (7036)

रिटेल - रु. 26 करोड़

श्री सैफ मोहम्मद, वरिष्ठ प्रबंधक

अंचल कार्यालय, वाराणसी (7036)

एमएसएमई - रु. 7 करोड़

श्री अमित खन्ना, वरिष्ठ प्रबंधक

अंचल कार्यालय, वाराणसी (7036)

वित्तीय वर्ष 202-21के दौरान में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विभाग
(स्मार्ट एपीआर)

प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र - रु. 39 करोड़

श्री अमित खन्ना, वरिष्ठ प्रबंधक

अंचल कार्यालय, वाराणसी (7036)

वसूली
नकदी वसूली - रु. 11.45 करोड़
खाता अद्यतन - रु. 7.77 करोड़
एमएल वसूली - रु. 1.21 करोड़

श्री निशीश्वरी प्रताप सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक

श्री सुमित कुमार, प्रबंधक

अंचल कार्यालय, वाराणसी (7036)

वित्त वर्ष 2020-21 की कारोबारी उपलब्धियों के लिए वाराणसी अंचलाधीन सभी स्टाफ सदस्यों को बधाई एवं वित्त वर्ष 2021-22 हेतु अग्रिम शुभकामनाएं

संस्कृत भाषा में वकालत करने वाले वाराणसी की शान

अधिवक्ता आचार्य पंडित श्यामजी उपाध्याय

संस्कृत भाषा को नई पहचान दिलाने के लिए वाराणसी के अधिवक्ता आचार्य श्यामजी उपाध्याय जी ने 40 वर्षों से अनोखी मुहिम छेड रखी है। आचार्य श्यामजी उपाध्याय भारत के ऐसे एकमात्र वकील हैं जो अपना सारा मुकदमा संस्कृत में ही लड़ते हैं। न्यायालय में वकालतनामा पेश करने की बात हो या शपथपत्र, प्रार्थनापत्र, दावा और वकालतनामा आदि जमा करने की बात हो, आचार्य श्यामजी उपाध्याय यह सभी काम संस्कृत भाषा में ही करते हैं। इतना ही नहीं, आचार्य जब कोर्ट में संस्कृत भाषा में जिरह करने लगते हैं तो विरोधी वकील के पास कोई जवाब नहीं होता है। आचार्य श्यामजी उपाध्याय की मानें तो वह 40 साल से संस्कृत को बढ़ावा देने के लिए संघर्ष कर रहे हैं और इसी वजह से वे संस्कृत में ही मुकदमा लड़ते हैं। उनका मानना है कि ऐसा करने से देववाणी के प्रति लोगों को जागरूक किया जा सकता है।

श्री श्याम उपाध्याय जी मूल रूप से मिर्जापुर के निवासी हैं। श्री श्याम उपाध्याय जी संस्कृत में आचार्य और बीएएलएलबी है। वह 1978 से वकालत कर रहे हैं। आचार्य श्याम को संस्कृत की प्रारंभिक जानकारी उनके पिता स्वर्गीय संगठा प्रसाद उपाध्याय से ही मिली। घर में संस्कृत के प्रति लोगों में अधिक लगाव था। संस्कृत के प्रति प्यार और बचपन के दिनों को याद करते हुए आचार्य श्यामजी उपाध्याय ने बताया कि एक बार अपने पिता के साथ कहीं जा रहे थे । रास्ते में पिताजी को कुछ लोग मिल गए और सभी आपस में भोजपुरी में बात करने लगे । इसी दौरान उनके पिता ने लोगों से कहा कि जिस तरीके से हम भोजपुरी में बात कर रहे हैं क्या हम वैसे ही संस्कृत में बात नहीं कर सकते? यह बात भले ही उनके पिता के साथ वालों को समझ में आई या नहीं आई लेकिन आचार्य श्याम उपाध्याय के दिल में यह बात उतर गई। दिल में संस्कृत में शिक्षा हासिल करने की इच्छा लिए श्यामजी उपाध्याय अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाते रहें। उन्होंने संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय से बौद्ध दर्शन में आचार्य हासिल किया। अपने गुरु के कहने पर उन्होंने पहले अध्यापन का काम किया। हालांकि श्याम उपाध्याय कुछ और करना चाहते थे। यही कारण था कि उन्होंने बाद में गोरखपुर विश्वविद्यालय से संबद्ध हरिश्चंद्र महाविद्यालय से बीएएलएलबी की डिग्री हासिल की। इसके बाद उन्होंने 1978 से संस्कृत भाषा में ही मुकदमा लड़ना शुरू किया जो आज तक जारी है।

आचार्य श्यामजी उपाध्याय अपने बचपन में अपने पिता से सुन रखा था कि कचहरी में सारा कामकाज हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू भाषा में होता है, संस्कृत का प्रयोग नहीं होता। तभी से उन्होंने अपने मन में ये बात बैठा ली थी कि मैं वकील बनूंगा और कचहरी का सारा कामकाज इसी भाषा में करूंगा। श्याम अपनी वकालत के जरिए कई बड़े-बड़े मुकदमे को सुलझा चुके हैं। जब वे संस्कृत में दलीलें पेश करते हैं तो सामने वाले वकीलों की बोलती बंद हो जाती है। संस्कृत के प्रति आचार्य श्यामजी के अगाध प्रेम को देखते हुए भारत सरकार की ओर से भी उन्हें सम्मानित किया गया है। पूर्व मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ मुरली मनोहर जोशी ने देश भर के 25 संस्कृत मित्रों को पुरस्कृत किया था जिसमें आचार्य श्यामजी उपाध्याय भी शामिल थे।

आशुतोष भास्कर भारती

वरिष्ठ प्रबंधक (विपणन), अंका. वा.

चंदौली जमपद को विश्व स्तर पर प्रसिद्धि दिलाने वाला

चाक हाओ (काला धान)

चाक हाओ (काला धान)

वाराणसी अंचल स्थित चंदौली जिला को पूर्वांचल का धान का कटोरा कहा जाता है। चंदौली में धान की अच्छी पैदावार होती है। यहाँ 15 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में धान की खेती होती है। यहाँ कई प्रकार के धान की खेती होती है, उनमें से एक है औषधीय गुणों से युक्त काला धान। चंदौली में चाक हाओ (काला धान) नागालैंड से लाया गया था।

केंद्रीय मंत्री मेनका गाँधी ने चंदौली में नाको हाओ की खेती करने का प्रस्ताव यहाँ के किसानो को दिया था। जिले में नागालैंड से चाक हाओ (काला धान) का 15 किलो बीज मँगाया गया था। जिला प्रशासन ने ड्रीम प्रोजेक्ट के तौर पर इसकी शुरुआत की और 15 किसानों ने प्रदर्शन के तौर पर इसकी खेती की। काला धान का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 35 क्विंटल है। इसकी न्यूनतम कीमत 8500 रुपये प्रति क्विंटल है।

प्रशासन की पहल पर काला चावल को कलेक्टिव मार्क यानि विशेष उत्पाद की मान्यता मिली है। चंदौली कृषि उत्पाद में यह मार्क दिलाने वाला प्रदेश का इकलौता जिला है।

इंडियन राइस रिसर्च इंस्टीट्यूट हैदराबाद, फूड टेक्नॉलाजी इंस्टीट्यूट प्रयागराज और इंटरनेशनल राइस रिसर्च इंस्टीट्यूट बीएचयू ने इसकी गुणवत्ता की जाँच कर इसमें फाइअबर, बिटामिन ई, जिंक और आयरन होने की पुष्टि की है। इसके सेवन से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

गुणवत्ता, बेहतर उत्पादन व अच्छी कीमत के कारण धान के कटोरे में साल दर साल इसकी खेती का रकबा बढ़ रहा है। अपनी खासियत के कारण देश के बड़े महानगरों के मॉल, होटलों व दुकानों के साथ-साथ विदेशों में इस चावल की मांग बढ़ गई है। चंदौली से काला चावल का निर्यात आस्ट्रेलिया सहित विश्व के कई देशों में किया जा रहा है।

किसा बेलग्रामी

सहायक प्रबंधक, चंदौली शाखा

मसाने की होली

वाराणसी में हजारों वर्षों से विश्व प्रसिद्ध चिता की भस्म से अनोखी होली खेली जाती है जो मसाने की होली के नाम से जानी जाती है और पूरे विश्व में केवल काशी में ही खेली जाती है। मान्यता के अनुसार, रंगभरी एकादशी के दिन भगवान शिव, माता पार्वती के साथ गौना कर काशी आए थे। इसी खुशी में काशीवासी, भगवान शिव के गण व जनमानस और बारातियों को अबीर गुलाल से सराबोर किया गया था। इसी परम्परा की कड़ी में रंगभरी एकादशी को श्री काशी विश्वनाथ मंदिर परिसर के महंत आवास से गर्भगृह तक रजत प्रतिमा की पालकी निकाली जाती है। ढोल नगाड़ों और संगीत के बीच हर-हर महादेव के उद्घोष पर उत्सव मनाया जाता है।

वहीं रंग एकादशी के दूसरे दिन काशी में स्थित श्मशान पर भी चिताओं की भस्मी के साथ होली खेलने की भी एक अनूठी परंपरा है जो सारी दुनिया मे सिर्फ काशी में ही देखने को मिलती है। इसके संबंध में एक मान्यता यह है कि जब बाबा विश्वनाथ मां पार्वती का गौना करने के लिए आये थे तो उनके साथ भूत, प्रेत, पिशाच, यक्ष गन्धर्व, किन्नर जीव जंतु आदि नहीं थे, जिनके लिए श्मशान पर चिताओं की भस्मी से होली खेले जाने की परंपरा को बनाया गया जिसका निर्वहन आज तक काशी की धरती पर किया जाता है।

काशी के मणिकर्णिका घाट पर जलती चिताओं के बीच पदम् विभूषण पंडित छन्नू लाल मिश्र के शास्त्रीय गायन **'खेले मसाने में होरी दिग्मबर खेले मसाने में होरी'** की धुन पर जहां साधु सन्यासी सहित काशीवासी श्मशान में होली खेलते हैं। ये काशी का वो घाट है जहां चिता की आग शांत नहीं होती लेकिन साल में एक ऐसा भी दिन आता है जब काशी के लोग यहां आकर इन चिताओं की राख से होली खेलते हैं।

रंगभरी एकादशी के दूसरे दिन ये यहां आकर बाबा श्मशान नाथ की आरती कर चिता से राख की होली शुरू करते हैं। ढोल और डमरू के साथ ये श्मशान हर हर महादेव के उद्घोष से गुंजायमान हो जाता है और श्मशान घाट पर चिता भस्म से होली खेली जाती है। कहा जाता है कि इस होली के खेलने वाले शिवगण के साथ भगवान शिव होली खेलते हैं और इस राख से तारक मंत्र प्रदान करते हैं।

राजकुमार पांडेय , वरिष्ठ प्रबंधक, अंचल कार्यालय, वाराणसी

संवेदनाएं

मैं बुद्ध होना चाहती हूँ

हाँ! मैं एक स्त्री हूँ,
और मैं बुद्ध होना चाहती हूँ।

जीवन के संताप से निकल कर,
सत्य को ढूँढना चाहती हूँ।

चक्करघिन्नी सी नाकह्ती जिंदगी से,

विराम ले, ज्ञान अर्जना चाहती हूँ।

ईर्ष्या से भरे इस युग में,
हर एक से प्रेम करना चाहती हूँ।
यूँ ही जीवन और मृत्यु से द्वंद नें फँस

स्वयं को खोना नहीं चाहती,

मैं स्वयं को ढूँढ, शांति पाना चाहती हूँ।

किसी ग्लानि के साथ नहीं,
मैं आत्मसंतुष्टि के साथ मरना चाहती हूँ।

हाँ! मैं एक स्त्री हूँ,
और मैं बुद्ध होना चाहती हूँ।

ये सिर्फ आंकड़ें नहीं हैं

यह जो जवान लाशें पड़ी हैं
यह केवल जनसंख्या के चंद घटक नहीं थें

इनका चला जाना मात्र ईकाई, दहाई और सैकड़े का
कम हो जाना नहीं है

यह नयी उम्मीदें, नए सपनों और असंख्य संभावनाओं का
कुछ समय के लिए रूक जाना है
इनका असमय चला जाना
ऐसी क्षति है

जिसकी भरपाई, तुरंत ही संभव नहीं।

(कोरोना संक्रमण के कारण विश्व स्तर पर लाखों लोगों ने अपनी जान गवाई है। यह कविता उनको समर्पित है।)

सबा तरन्नुम

प्रबंधक, महमूरगंज शाखा

हे दयानिधे! रथ रोको अब

हे दयानिधे !

रथ रोको अब,

क्यों प्रलय की तैयारी है ?

ये बिना शस्त्र का युद्ध है जो,
महाभारत से भी भारी है !!

नैना रोते रोते सूखे,
अब नीर कहाँ इन आँखों में !!

परवाज पे जिनकी गर्व बड़ा,
अब जान कहाँ इन आंखों में !!

अपने भी साथ नही अपने,

जंग जीवन से यूँ जारी है ,
ये बिना शस्त्र का युद्ध है
जो महाभारत से भी भारी है !!

हमने खुद को यूं बसा लिया,
वैज्ञानिकता की बांहों में।

अवरोध खड़े कर दिए बड़े,
हर एक दूजे की राहों में।।
धरती माता का दोहन तो कर लिया
गगन की बारी है।
ये बिना शस्त्र का युद्ध है
जो महाभारत से भी भारी है।।

जिन मुश्किल से गुजर रहे,
ये खेल हमारे अपने हैं ।
जीवन अनमोल बिका जिन पर
कुछ चंद सुखों के सपने हैं ।।

हर ओर तमस दिखता है अब,
भय में हर रात गुजारी है ।

ये बिना शस्त्र का युद्ध है
जो महाभारत से भी भारी है!!!
कितने परिचित-कितने अपने-
कितने आखिर यूँ चले गए।

जिन हाथों में दौलत-संबल,
सब क्रूर काल से छले गए !!

हे राघव-माधव-मृत्युंजय,
पिघलो ये अर्ज हमारी है !!
ये बिना शस्त्र का युद्ध है
जो महाभारत से भी भारी है !!

अज्ञात

हजार कोशिशें कर लीं तुझे भुलाने की

हजार कोशिशें कर लीं तुझे भुलाने की
कसक न दिल से गई तेरे याद आने की।

किया ये तय ना जायेंगे तेरी गलियों में
मगर मिली मुझे हर राह तेरे ठिकाने की।

वो कौन छू के गई मुझको कैसी आहट थी
जो देती दस्तक भरी नींद से जगाने की ।

नजर ऊठे ना कहीं और एक तेरे सिवा
मिली ना मोहिनी मूरत भी तेरे साने की।

किसे फिकर है यहाँ तेरी नेक चलनी का
जहाँ को अब भी वही आदत है आजमाने की।

अजब चलन है यहाँ मूरतों के सजदों का
बचेगी किस तरह नजरों से इसे ज़माने की।

मिलेगा रेत का दरिया ही तपती राहों में
कहाँ से आस रखते प्यास को बुझाने की।

गुजार देता तेरे एक पल में सैकड़ों सदियाँ
अगर न आदतें हो रूठने मनाने की।

वफा का हमको सिला तोहमतें तमाम मिली
वही मिजाज है तो अब भी है इस जमाने की।

मैं एक रोज यूँ ही फऩा न हो जाऊँ चंदर
तुम मगर कोशिशें करना मुझे बचाने की।

चंद्रेश शुक्ला
मुख्य प्रबंधक, रेणुकूट शाखा

9वां अखिल भारतीय यूको बैंक राजभाषा अधिकारी सम्मेलन

दिनांक 19-20 मार्च, 2021 को सॉल्टलेक स्थित सेंट्रल स्टाफ कॉलेज में 9वां अखिल भारतीय यूको बैंक राजभाषा अधिकारी सम्मेलन "शिखर की चुनौती" का आयोजन किया गया। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में श्री अतुल कुमार गोयल, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी शामिल हुए थे। सम्मेलन में शामिल राजभाषा अधिकारियों के लिए श्री अतुल कुमार गोयल जी का संबोधन नई उर्जा का संचार करने वाला था। उन्होंने राजभाषा अधिकारियों को क्षेत्रीय पुरस्कार प्राप्ति हेतु प्रोत्साहित किया। एमडी सर ने राजभाषा अधिकारियों से उनके अंचल में राजभाषा कार्यांवयन में हो रही प्रगति पर चर्चा, अंचलों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं का अवलोकन किया, रिपोर्ट पर चर्चा की एवं भविष्य हेतु शुभकामनाएं दी।

सम्मेलन के दूसरे दिन में श्री अजय व्यास, कार्यपालक निदेशक की गरिमामयी उपस्थिति से राजभाषा अधिकारियों को राजभाषा को प्रोत्साहित किया। पत्रिका बनाने के दौरान बैंकिंग उत्पादों के साथ-साथ बैंक के प्रतिभावान कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने हेतु उनकी उपलब्धियों को पत्रिका में शामिल करने का सुझाव दिया।

सम्मेलन में **श्री बी एल मीना, तकनीकी, कार्यांवयन एवं सेवा, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार** का जुड़ना यूको बैंक के लिए गौरव की बात थी। उनका मार्गदर्शन हमारे लिए दैंदिन के कार्यालयीन कार्यों को और बेहतर तरीके से निषपादित करने में अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा। राजभाषा का कार्यांवयन छोटे-छोटे सकारात्मक प्रयासों द्वारा ही संभव है। तकनीक ने निश्चित रूप से कार्यानवयन को नई दिशा एवं गति प्रदान की है। श्री बी एल मीना जी का सत्र उपयोगी एवं अनुकरणीय था।

दिनांक 20.03.2021 को महाप्रबंधक महोदय श्री नरेश कुमार जी एवं प्राचार्य महोदय श्री मनोहर पाढ़ी जी की उपस्थिति में आयोजित सांस्कृतिक संध्या में राजभाषा अधिकारियों द्वारा प्रस्तुती दी गई। ऐसा लगा सम्पूर्ण भारतवर्ष सीमाओं के बंधन को तोड़कर उस छोटे से सभागार में आ बसा है। संक्षेप में कहूं तो – अद्भुत संगम एवं अविस्मरणीय अनुभूति।

यूको बैंक जी. डी. बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला - 2020-21

यूको बैंक के संस्थापक स्व. जी. डी. बिड़ला जी की स्मृति में दिनांक 24.03.2021 को अंचल कार्यालय, वाराणसी द्वारा “बैंक में अनुशासन” विषय पर यूको बैंक जी. डी. बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला 2020-21 का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता यूको बैंक के सेवानिवृत्त महाप्रबंधक डॉ. वीरेंद्र प्रसाद सिंह थे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक (कार्यांवयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र), गाजियाबाद थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री घनश्याम परमार, सहायक महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख ने की। कार्यक्रम में उप अंचल प्रमुख श्री संजय कुमार सिन्हा भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में नराकास बैंक वाराणसी के सदस्य, वाराणसी नगर स्थित विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधि, यूको बैंक, प्रधान कार्यालय के राजभाषा विभाग के विभाग प्रभारी श्री अमलशेखर करणसेठ, सभी शाखा प्रमुख एवं अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सुश्री पूनम कुमारी प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा ने किया।

मुख्य वक्ता डॉ. वीरेंद्र प्रसाद सिंह ने अनुशासन को जीवन का अभिन्न हिस्सा बताया। अनुशासन एक जीवन शैली है। अनुशासन प्रयास और सफलता के बीच का सेतु है। व्यक्ति की जीवन शैली जितनी अनुशासित होती है, वह व्यक्ति जीवन में उतना ही सफल होता है। सम्पूर्ण सृष्टि ही अनुशासन के अदृश्य धागे में बंधी है। प्रकृति के सभी उपादान स्वतः ही अनुशासित है। किसी बाहरी कारण को उन्हें अनुशासित करने की आवश्यकता नहीं पडती है। प्रकृति अगर अनुशासनहीन हो जाए तो मानव का आस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

अनुशासन प्रयास और सफलता के बीच का सेतु कोई भी संस्था अनुशासन के नियमों से बंधकर ही विकास कर सकती है। कर्मचारियों का समय पर कार्यालय में आना, पूरी निष्ठा एवं साफ नियत से अपना नियत कार्य निष्पादित करना तथा समय पर कार्यालय छोडना अनुशासन का श्रेष्ठ उदाहरण है।

विशिष्ट अतिथि श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक (कार्यांवयन) ने अपने व्क्तव्य में भारत सरकार की राजभाषा नीति पर संक्षिप्त व्याख्यान दिया। अपने वक्तव्य में उन्होंने सरकारी कर्मचारियों को दैनिक कार्यों में शत प्रतिशत राजभाषा नीति का पालन करने का सुझाव दिया।

अध्यक्ष महोदय ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में सभी कर्मचारियों को अनुशासित जीवन शैली अपनाने हेतु प्रोत्साहित किया। अनुशासित व्यक्ति जीवन में सफलता के श्रेष्ठ शिखर को छूता है। अनुशासन द्वारा ही स्वस्थ समाज एवं देश का निर्माण संभव है।

सहायक महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री घनश्याम परमार जी ने विशिष्ट अतिथि श्री नरेंद्र सिंह मेहरा जी को स्मृतिका भेंट कर उनका स्वागत एवं सम्मान किया। श्री घनश्याम परमार जी ने मुख्य वक्ता डॉ. वीरेंद्र प्रसाद सिंह जी को वित्तीय वर्ष 2020-21 का यूको बैंक जी.डी. बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला सम्मान 2020-21 एवं स्मृतिका प्रदान कर उनका स्वागत एवं सम्मान किया।

अनुशासन है एक जीवनशैली

वाराणसी। यूको बैंक के संस्थापक स्व. जी डी बिड़ला की स्मृति में अंचल कार्यालय में ''बैंक में अनुशासन'' विषय व्याख्यानमाला आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता यूको बैंक के सेवानिवृत्त महाप्रबंधक डा. वीरेंद्र प्रसाद सिंह थे। मुख्य वक्ता डा. वीरेंद्र प्रसाद सिंह ने अनुशासन को जीवन का अभिन्न हिस्सा बताया। अनुशासन एक जीवन शैली है। अनुशासन प्रयास और सफलता के बीच का सेतु है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि नरेंद्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय उत्तरी क्षेत्र, गाजियाबाद थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता घनश्याम परमार, सहायक महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख ने की। कार्यक्रम में उप अंचल प्रमुख संजय कुमार सिन्हा भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में नराकास बैंक वाराणसी के सदस्य सचिव प्रमोद बर्मन एवं अन्य सदस्य, वाराणसी नगर स्थित विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधि,यूको बैंक, प्रधान कार्यालय के राजभाषा विभाग के विभाग प्रभारी श्री अमलशेखर करणसेठ,सभी शाखा प्रमुख एवं अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सुश्री पूनम कुमारी प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा ने किया।

मुख्य वक्ता डॉ. वीरेंद्र प्रसाद सिंह का परिचय

जन्म - 1 जनवरी, 1949 (आधिकारिक), ग्राम - टंडवा, जनपद - आजमगढ (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा - शास्त्री (1966), प्रथम श्रेणी, प्रथम स्थान, काशी विद्यापीठ (राष्ट्रीय छात्रवृति), एम. ए. (समाजशास्त्र) (1968), प्रथम श्रेणी, प्रथम स्थान, काशी विद्यापीठ (राष्ट्रीय छात्रवृति)

शोध कार्य - (1968-70), आई. आई टी. कानपुर

मास्टर ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (वित्त) (1983), प्रथम श्रेणी, बी. एच. यू.

कर्मक्षेत्र - 1. व्याख्याता के रूप में काशी विद्यापीठ में समाजशास्त्र विभाग में जुलाई 1970 से 1971 तक कार्य 2. यूको बैंक - दिसंबर, 1971 में परीविक्षाधीन अधिकारी के रूप में कार्यग्रहण से लेकर महाप्रबंधक तक की कार्ययात्रा के उपरांत 31 दिसंबर 2008 को सेवानिवृत्त।

साहित्य सृजन - मालवीय अनुसंधान केंद्र, समाज विज्ञान विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय तथा समाजशास्त्र अध्ययन मंडल, काशी विद्यापीठ, वाराणसी की सामाजिकी में समाज विज्ञान से संबंधित शोधपूर्ण आलेख का प्रकाशन, बैंक में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की दिशा में उल्लेखनीय योगदान, भारतीय रिज़र्व बैंक की पुस्तक लेखन उपसमिति के सदस्य, परीक्षक तथा विषय विशेषज्ञ के रूप में कार्य, हिंदी में बैंकिंग की पुस्तकों के लेखन एवं प्रकाशन में सहयोग। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में समय - समय पर कविताएं प्रकाशित, जिसमें साहित्य अमृत, साहित्यधर्मिता, पूर्वा, लोकवार्ता, रेणुधरा, महांचल, यूकोभारती, आज “साप्ताहिक” आदि प्रमुख है।
आकाशवाणी के इलाहाबाद, जयपुर, दिली, कोलकाता आदि केन्द्रों से कविताओं का प्रसारण ।

काव्य - पुस्तक - “आस्तित्व ज्यामिति” का 2007 में प्रकाशन, “काव्यमय गीता” का 2020 में प्रकाशन।

पुरस्कार एवं सम्मान - रोटरी क्लब, रेणुकूट द्वारा “विद्या कोठारी साहित्य पुरस्कार “ एवं रोटरी “साहित्य भूषण “ सम्मान।
भारतीय राजभाषा परिषद , नई दिली द्वारा “राजभाषा गौरव” (2006-07) सम्मान।
विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ द्वारा हिंदी सेवा एवं सारस्वत साधना हेतु “विद्यासागर” की उपाधि से सम्मानित।

परिभ्रमण - इंग्लेंड, फ्रांस, स्विटजरलैंड, अमेरिका, कनाडा, कंबोडिया, वियतनाम, सिंगापुर, यूएई।

यूको राजभाषा सम्मान एवं यूको मातृभाषा सम्मान - 2020-21

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, वाराणसी द्वारा दिनांक 31.03.2021 को यूको राजभाषा सम्मान एवं यूको मातृभाषा सम्मान समारोह 2020-21 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री रामनरेश तिवारी (पिंडीवासा), सेवानिवृत्त आई.ए.एस.,जिला प्रबंधक/उपमहाप्रबंधक (सेवानिवृत्त) खाद्य एवं उपभोक्ता मंत्रालय, भारत सरकार सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति, सदस्य, क्षेत्रीय रेल उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति, प्रयागराज थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री घनश्याम परमार, सहायक महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख ने की। कार्यक्रम में उप अंचल प्रमुख श्री संजय कुमार सिन्हा भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में नराकास बैंक वाराणसी के सदस्य, वाराणसी नगर स्थित विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधि, सभी शाखा प्रमुख एवं अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सुश्री पूनम कुमारी प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा ने किया। कार्यक्रम का आयोजन ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों माध्यमों से किया गया था।

कार्यक्रम में यूको मातृभाषा सम्मान के तहत वर्ष 2020 में उत्तर प्रदेश सिविल सेवा की परीक्षा हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण करने वाले शीर्ष दो अभ्यर्थियों श्री गोपाल शर्मा, उप जिलाधिकारी (प्रशिक्षु) तथा श्री विपिन कुमार शिवहरे उप जिलाधिकारी (प्रशिक्षु) को रु. 5000/- की नकद राशि एवं स्मृतिका से सम्मानित किया गया।

यूको राजभाषा सम्मान के तहत वर्ष काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से हिंदी स्नातकोत्तर की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले शीर्ष दो विद्यार्थियों **श्री सव्यसाची मिश्र (प्रथम स्थान, 83%) एवं सुश्री सौम्या वर्मा (द्वितीय स्थान, 79.9%)** को रु. 5000/- की नकद राशि एवं स्मृतिका से सम्मानित किया गया।

शुभकामनाएं

यूको राजभाषा मिशन
" राजभाषा के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट श्रेणी
का बैंक बनने हेतु,
बैंक के सभी स्टाफ सदस्यों को
राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में,
प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना द्वारा
दृढ़तापूर्वक सक्रिय कर एवं
राजभाषा नीति का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित कर,
नवीनतम प्रौद्योगिकी को राजभाषा से जोड़कर,
बैंकिंग को जन-उन्मुख बनाते हुए
बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करना "
यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust

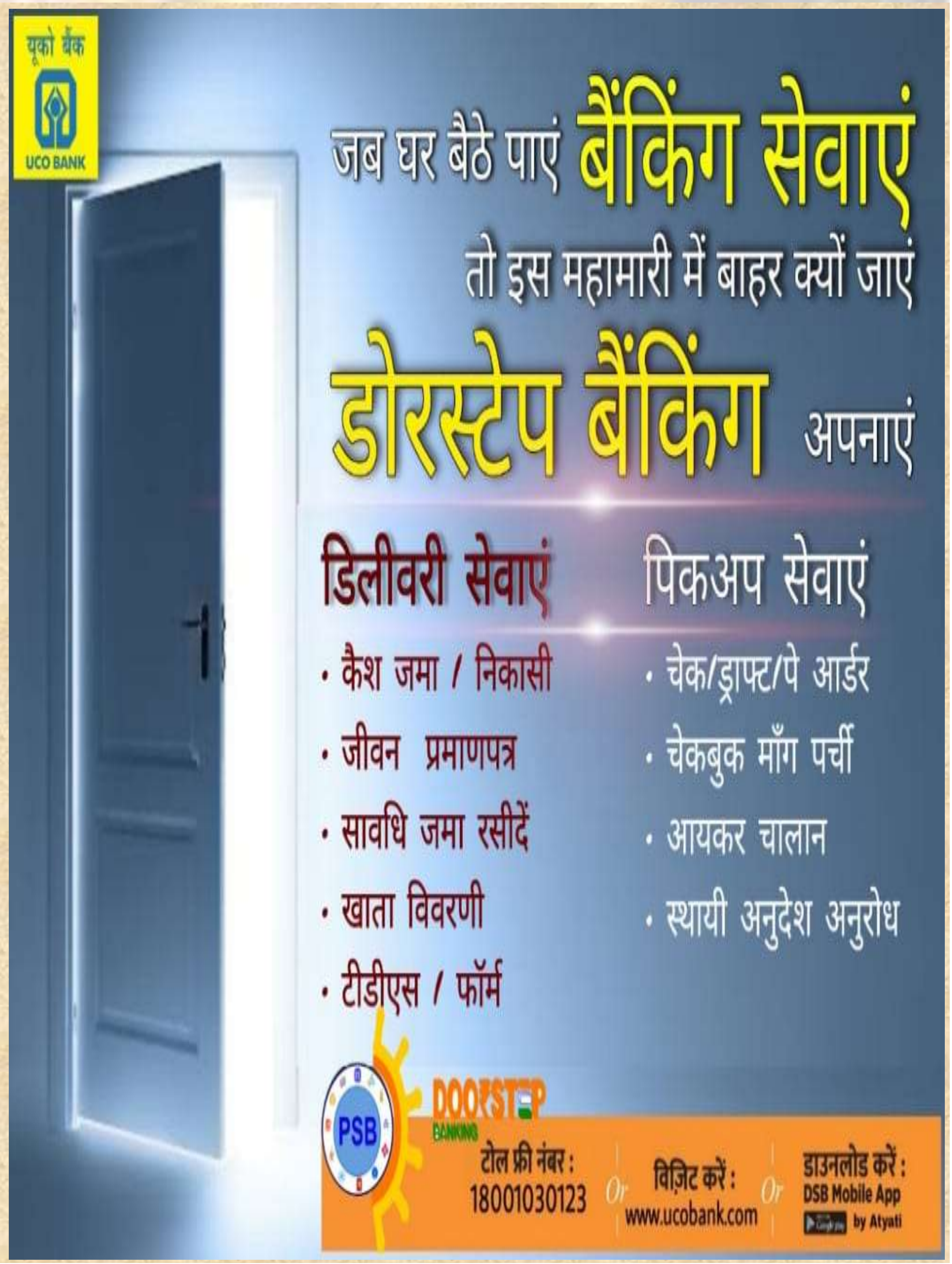
यूको बैंक
UCO BANK
जब घर बैठे पाएं बैंकिंग सेवाएं
तो इस महामारी में बाहर क्यों जाएं
डोरस्टेप बैंकिंग अपनाएं
डिलीवरी सेवाएं
• कैश जमा / निकासी
• जीवन प्रमाणपत्र
• सावधि जमा रसीदें
• खाता विवरणी
• टीडीएस / फॉर्म
पिकअप सेवाएं
• चेक/ड्राफ्ट/पे आर्डर
• चेकबुक माँग पर्ची
• आयकर चालान
• स्थायी अनुदेश अनुरोध
PSB
DOORSTEP BANKING
टोल फ्री नंबर : 18001030123
Or
विज़िट करें : www.ucobank.com
Or
डाउनलोड करें : DSB Mobile App
by Atyati

तमसो मा ज्योतिर्गमय

यूको बैंक (भारत सरकार का उपक्रम) UCO BANK (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का — Honours Your Trust